चन्द्रकान्ति रमावती देवी
आर्य महिला पी.जी. कालेज

दीवान बाजार, गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित), ISO प्रमाणित 9001:2015 एवं 14001:2015

(सम्बद्ध दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

NAAC | UGC | NCTE | ISO 9001:2015

विवरणिका

हमारी सुविधाएँ-

- वाईफाई परिसर
- स्मार्ट क्लास और ICT लैब
- कम्प्यूटर और भाषा प्रयोगशाला
- केन्द्रीय डिजिटल पुस्तकालय
- हॉस्टल
- कैन्टीन
- वाचनालय
- एन.सी.सी.
- एन.एस.एस.
- रोवर्स-रेंजर्स
- गृह विज्ञान एवं मनोविज्ञान प्रयोगशाला
- राजर्षि टण्डन अध्ययन केन्द्र

स्नातक पाठ्यक्रम

- बी.ए.
- बी. कॉम
- बी.एस-सी. (गृह विज्ञान)
- बी.एड.

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

- राजनीति विज्ञान
- शिक्षाशास्त्र
- गृह विज्ञान
- दृश्य कला
- एम.एड.

अन्य कोर्स : द्विपल C, उद्यमिता विकास कार्यक्रम, फैशन डिजाइनिंग टेराकोटा, कुकरी, बेकरी एवं खाद्य संरक्षण

Scanned with OKEN Scanner

स्मृतिशेष डॉ0 रामरक्षा पाण्डेय (गुरु जी)

संस्थापक प्रबन्धक
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर

'गुरू जी' की संज्ञा से विभूषित डॉ0 रामरक्षा पाण्डेय का जन्म 23 मई सन् 1938 में उ0प्र0 के कुशीनगर जनपद के चौरादीगर नामक ग्राम में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए उन्होनें संस्कृत में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से पी-एच0डी0 एवं 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की।

1963 में डी0ए0वी0 इण्टर कालेज में प्रवक्ता पद पर कार्यभार ग्रहण किया। 1973 में डी0ए0वी0 डिग्री कालेज में संस्कृत विभाग में प्रवक्ता पद पर सेवा देते हुए रीडर के पद से रिटायर हुए।

आपने अपनी धर्मपत्नी की माँ श्रीमती रमावती देवी की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से 1990 में चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की। इस महाविद्यालय को **महानगर का प्रथम महिला महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है।**

नारी उत्थान के नव प्रवर्तक के रूप में गुरू जी ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की। नारियल के समान ऊपर से सख्त एवं भीतर से नरम स्वभाव वाले गुरू जी ने नारी शिक्षा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हुए एक तपस्वी की भाँति स्वंय को समर्पित कर दिया। वाग्यदेवी माँ सरस्वती की सेवा करते हुए 11 जनवरी 2019 को आप स्मृतिशेष हो गये।

गुरूजी भारतीय संस्कृति परम्परा के पोषक थे। आपने एक युग का निर्माण किया। पूरा महाविद्यालय परिवार आपके योगदान का ऋणी रहेगा। आपके श्री चरणों में समर्पित कुछ पंक्तियां-

जय-जय-जय गुरूदेव मनस्वी, महानगर की शान यशस्वी ।
सत्य, सबल, कर्मठ प्रतिमूर्ति, करते ज्ञान पिपासा पूर्ति ।
नियम-संयम जीवन आधार, शिक्षा का देते उपहार ।
विधाता के अनुपम वरदान, नारी शिक्षा ही संधान ।
भारतीय संस्कृति के संरक्षक, नारी उत्थान के नव प्रवर्तक ।
वैदिक संस्कृत के थे ज्ञाता, जिसमें सारा ज्ञान समाता ।
ऐसे महापुरूष को वंदन, कोटि-कोटि शत्-शत् नमन ।

Scanned with OKEN Scanner

पूर्वांचल के गौरवमयी प्रभाग गुरू गोरक्षनाथ की पावन भूमि में बसे चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर की स्थापना, 'श्रीमती चन्द्रकान्ति देवी आर्य महिला कल्याण संस्थान' द्वारा कार्तिक शुक्ल नवमी के दिन संवत् 2047 सन् 1990 को हुई। विगत 33 वर्षों से 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', सूक्ति को प्रतिष्ठित करने हेतु यह महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस महाविद्यालय की स्थापना का मूल उद्देश्य नारी को आत्मनिर्भर बनाकर ऐसे संस्कारवान व स्वावलम्बी समाज की रचना करना है जो राष्ट्र को दिशा और सकारात्मक ऊर्जा दे सके।

डॉ. विजय लक्ष्मी मिश्रा
प्रबन्धक

हमारे संस्थान का आदर्श वाक्य है 'सरस्वती श्रुति महती महीयताम्', जिसका तात्पर्य है-ज्ञान का संचय ही सबसे बड़ी निधि है। इस शीर्षक वाक्य को चरितार्थ करते हुए इस महाविद्यालय का उद्देश्य भी ऐसे ही योग्य एवं कुशल युवा वर्ग का विकास करना है, जो ज्ञान प्राप्ति एवं चरित्र निर्माण हेतु कृत संकल्पित हों।

हमारा संकल्प (Our Vision) : छात्राओं का सर्वांगीण विकास

इस संस्था का उद्देश्य स्त्री शिक्षा के माध्यम से छात्राओं में ज्ञान तथा कौशल के साथ ही भारतीय सभ्यता, आर्य संस्कृति एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है। संस्था का यह सतत् प्रयास है कि छात्राओं को आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बनाकर ऐसे राष्ट्र की उन्नति में आशावादिता का संचार कर सकें।

हमारा लक्ष्य (Our Mission) :

पूजनार्थमहाभागा पूजाहम गृहम दीप्तयः ।
स्त्रियं गेहेसुनांविशेषो अस्तिकाशनः ॥

उपर्युक्त श्लोकानुसार यह कहना अतिश्योक्ति न होगी की स्त्री पूजनीय है क्योंकि वह ब्रह्माण्ड को अपने ज्ञान से आलोकित करती है। इसी कथन को आधार मानकर इस संस्था का लक्ष्य छात्राओं को ऐसी शिक्षा उपलब्ध कराना है जिसमें हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति एवं आधुनिक तकनीकी शिक्षा का उचित समन्वय हो।

हमारा लक्ष्य है-

1. उत्कृष्ट शिक्षा, ज्ञान, कौशल एवं आत्मविश्वास के विकास हेतु छात्राओं को विस्तृत पटल उपलब्ध कराना।
2. छात्राओं मे भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं मूल्यों को समाहित कर उनका बहुआयामी विकास करना।
3. विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं सृजनात्मक क्रियाकलापों द्वारा उनमें नवीन चिन्तन प्रवृत्ति का विकास करना।
4. खेलकूद, योगाभ्यास एवं आत्मरक्षा कौशल की शिक्षा द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास करके सामाजिक शोषण रोकने में सहायक बनाना।
5. विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों एवं प्रशिक्षण द्वारा छात्राओं को स्वावलम्बी बनाना।
6. एन.सी.सी., एन.एस.एस., रोवर्स-रेंजर्स एवं विविध पाठ्येत्तर क्रियाकलापों के माध्यम से छात्राओं को सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रीयता की भावना के विकास हेतु मंच प्रदान करना।

डॉ. सुमन सिंह
प्राचार्या

Scanned with OKEN Scanner

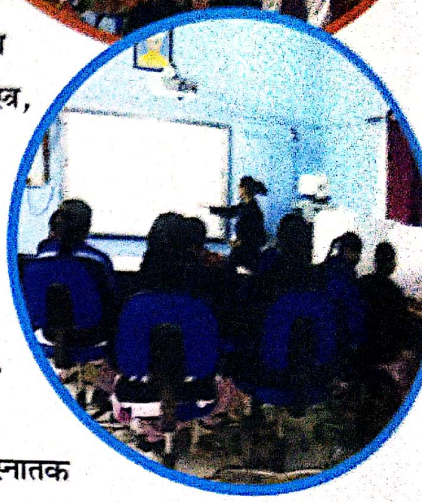

महाविद्यालय के विभिन्न संकाय :

महाविद्यालय में निम्नलिखित संकायों के अन्तर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन हो रहा है।

1. कला संकाय :

(i) स्नातक स्तर : महाविद्यालय में कला संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर कुल ग्यारह विषयों का पठन-पाठन होता है जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गृहविज्ञान, दृश्यकला, मंचकला (संगीत) प्राचीन इतिहास, कम्प्यूटर एप्लिकेशन, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विषय सम्मिलित किये गये हैं।

(ii) स्नातकोत्तर स्तर : इस स्तर पर महाविद्यालय में **राजनीतिशास्त्र, गृहविज्ञान, शिक्षाशास्त्र एवं दृश्यकला** विषयों का संचालन किया जाता है।

2. विज्ञान संकाय : इस संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर **बी. एस-सी. गृहविज्ञान** का पाठ्यक्रम संचालित है।

3. वाणिज्य संकाय : महाविद्यालय में सत्र 2016-17 से वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर **बी. कॉम.** का पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

4. शिक्षा संकाय : शिक्षा संकाय के अन्तर्गत महाविद्यालय में केवल छात्राओं के लिए सत्र 2005-06 से बी0 एड0 पाठ्यक्रम एवं सत्र 2007-08 से **एम. एड. पाठ्यक्रम** का संचालन कुशलता पूर्वक किया जा रहा है।

5. उत्तर प्रदेश राजर्षिटण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के अध्ययन केन्द्र : महाविद्यालय में छात्राओं के स्वरोजगार विकास हेतु **उत्तरप्रदेश राजर्षिटण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,** प्रयागराज के अध्ययन केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत स्नातक/स्नातकोत्तर डिग्री एवं डिप्लोमा कोर्स, बी0 बी0 ए0, एम0 बी0 ए0, पी0 जी0 डी0 सी0 ए0, एम0 सी0ए0 फैशन डिजाइनिंग, योगा तथा विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित सर्टिफिकेट कोर्स संचालित हो रहे हैं।

6. एन0सी0सी0, एन0एस0एस0 एवं रोवर्स रेंजर्स : सामुदायिक भावना के विकास हेतु महाविद्यालय में एन0 सी0 सी0, एन0 एस0 एस0 एवं रोवर्स रेंजर्स की इकाईयां भी कार्यरत हैं। स्नातक स्तर पर प्रवेश के समय छात्राओं को इनमे से किसी एक का चयन आवश्यक है।

स्नातक स्तर पर विषय चयन : बी0 ए0 में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों में से अधोलिखित एक समूह से केवल एक विषय का ही चयन किया जा सकता है। कुल तीन विषय बी0 ए0 प्रथम वर्ष में चुनने हैं।

विषय समूह :

समूह 'क'	समूह 'ख'	समूह 'ग'	समूह 'घ'	समूह 'ङ'	समूह 'च'	समूह 'छ'
मंचकला कम्प्यूटर एप्लिकेशन गृह विज्ञान दृश्यकला	हिन्दी	राजनीतिशास्त्र	अंग्रेजी संस्कृत	प्राचीन इतिहास	शिक्षाशास्त्र	समाजशास्त्र

Scanned with OKEN Scanner

स्नातकोत्तर स्तर पर विषय चयन :

स्नातकोत्तर स्तर पर अधोलिखित विषय में से किसी एक विषय का चयन किया जा सकता है ।

(i) गृह विज्ञान (ii) दृश्यकला (iii) शिक्षाशास्त्र (iv) राजनीति विज्ञान

प्रवेश सम्बन्धी सूचना एवं नियम :

(i) स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर प्रवेश मेरिट के आधार पर होगा ।

(ii) पूर्ण रूप से भरा हुआ आवेदन पत्र ही मान्य होगा ।

(iii) क्रीड़ा में राष्ट्रीय अथवा प्रादेशिक स्तर पर प्रमाण-पत्र धारक छात्राओं को क्रमशः 4 एवं 2 अंक धारांक स्वरूप मिलेगा ।

(iv) N.C.C. में 'B' अथवा 'C' प्रमाण पत्र धारक छात्राओं को क्रमशः 4 एवं 2 अंक धारांक स्वरूप मिलेगा ।

(v) दिव्यांगों, सैनिकों, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों तथा इस संस्था के कर्मचारियों एवं प्रबन्ध समिति के सदस्यों के पुत्रियों एवं आश्रितों को 4 अंक वेटेज के रूप में प्राप्त होगा ।

संलग्नकों का विवरण :

आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित अभिलेख संलग्न करना आवश्यक है ।

1. हाई स्कूल का अंक-पत्र तथा प्रमाण-पत्र की स्वप्रमाणित छायाप्रति ।
2. इण्टरमीडिएट परीक्षा के अंक-पत्र एवं प्रमाण-पत्र की स्वप्रमाणित छायाप्रति ।
3. पूर्व विद्यालय के प्रधानाचार्य से प्राप्त चरित्र प्रमाण-पत्र ।
4. पूर्व विद्यालय से निर्गत स्थानान्तरण प्रमाणपत्र (T.C) ।
5. यदि अनुसूचित जाति, जनजाति अथवा पिछड़ी जाति के हैं तो उस जाति का प्रमाण-पत्र (जिससे शासन से मिलने वाली सुविधाएँ मिल सके) ।
6. तीन रंगीन नवीनतम् पासपोर्ट साइज फोटो ।
7. आधार कार्ड की छायाप्रति ।
8. ई-मेल आई डी

Scanned with OKEN Scanner

नोट :

1. अपूर्ण आवेदन पत्र पर प्रवेश के सम्बन्ध में कोई विचार नहीं किया जायेगा ।
2. आवेदन पत्र पर माता-पिता या अभिभावक का स्थानीय सही पता, फोन (मोबाइल) नम्बर अवश्य दिया जाना चाहिए ।
3. बी० एस-सी० गृहविज्ञान में प्रवेश लेने की इच्छुक अभ्यर्थी को इण्टरमीडिएट परीक्षा विज्ञान वर्ग के साथ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है ।

गणवेश : ''नारीणां भूषणं लज्जा'' इसी विचार को ध्यान में रखते हुए इस महाविद्यालय में छात्राओं में समरूपता हेतु गुलाबी रंग का गणवेश निर्धारित है जिसमें गुलाबी सलवार, आधी बाँह का नेता कॉलर कुर्ता एवं दुपट्टा है । अभिभावकों से आग्रह है कि छात्राओं को निर्धारित गणवेश में ही महाविद्यालय में भेजें । मर्यादा, शालीनता एवं सादगी ही छात्राओं की शोभा है ।

अनुशासन : अनुशासन सफलता की कुंजी है । अनुशासित व्यक्ति ही जीवन में उन्नति कर पाता है । अतः महाविद्यालय छात्राओं में अनुशासन विकसित करना भी अपना विशेष उद्देश्य मानता है । महाविद्यालय परिसर में मोबाइल पर बात करना निषेध है ।

नकल प्रवृत्ति का निषेध : यह महाविद्यालय पिछले 33 वर्षों से एक नकलविहीन परीक्षा केन्द्र के रूप में जाना जाता है । यहाँ वर्ष भर नियमित कक्षाएँ चलती हैं । यही कारण है कि अब विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्राओं को कुल (15) स्वर्णपदक विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त हो चुके हैं तथा स्नातकोत्तर स्तर की छात्राएं प्रति वर्ष नेट/जे.आर.एफ. जैसी परीक्षाएँ उत्तीर्ण करती हैं ।

खेलकूद हेतु प्रशिक्षण : खेलकूद हेतु विशेष प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे वे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी खेलकूद की क्षमता का प्रदर्शन कर सकें ।

स्वर्णपदक-नकद पुरस्कार :

1. स्व० (श्रीमती) कमला रानी जैन स्मृति स्वर्ण पदक एवं नकद धनराशि (सर्वोत्तम छात्रा बी०ए०) ।
2. स्व० डॉ० रंजना स्मृति स्वर्ण पदक एवं नकद धनराशि (सर्वोत्तम छात्रा बी०एस-सी० - गृह विज्ञान) ।
3. स्व० रवीन्द्र नाथ मिश्र स्मृति स्वर्ण पदक एवं नकद धनराशि (सर्वोत्तम छात्रा एम०ए० - शिक्षाशास्त्र) ।
4. कान्ति पदक एवं नकद धनराशि (सर्वोत्तम छात्रा एम०ए० - गृहविज्ञान) ।
5. स्व० डॉ० रामरक्षा पाण्डेय स्मृति स्वर्ण पदक एवं नकद धनराशि (सर्वोत्तम बी०एड०) ।
6. स्व० सुमित्रा देवी स्मृति स्वर्ण पदक एवं नकद धनराशि (सर्वोत्तम एम०एड०) ।
7. इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष निर्धन मेधावी छात्राओं को भी महाविद्यालय की तरफ से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है ।

पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा : महाविद्यालय में प्रतिमाह यूनिट टेस्ट एवं मासिक परीक्षा तो होती है, साथ ही पूर्व विश्वविद्यालय परीक्षा भी होती है, इससे दोहरा लाभ होता है, एक तरफ तो छात्राओं की विश्वविद्यालीय परीक्षा की तैयारी हो जाती है, दूसरी तरफ उन्हें अपनी कमजोरियों के प्रति प्रतिपुष्टि एवं सुझाव भी लिए जाते हैं ।

अभिभावक शिक्षक बैठक : प्रत्येक सत्र में अक्टूबर एवं फरवरी के अन्तिम सप्ताह में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से छात्राओं के विकास की जानकारी अभिभावको को दी जाती है एवं उनसे प्रतिपुष्टि एवं सुझाव भी लिए जाते है ।

Scanned with OKEN Scanner

आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ : महाविद्यालय मे शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गुणवत्ता के उन्नयन हेतु महाविद्यालय में आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) का गठन किया गया है । जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकोष्ठ यथा-कैरियर काउन्सलिंग प्रकोष्ठ, प्रतियुष्टि प्रकोष्ठ, प्लेसमेंट प्रकोष्ठ, शिकायत निराकरण प्रकोष्ठ, नारी सुरक्षा प्रकोष्ठ आदि छात्राओं के कल्याणार्थ संचालित है ।

उपचारात्मक कक्षाएं (Remedial Classes) : शैक्षिक रूप से कमजोर छात्राओं के लिए प्रत्येक विषय में उपचारात्मक कक्षाओं का संचालन किया जाता है ।

शैक्षणिक भ्रमण — शिक्षा को व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़कर छात्राएँ इतिहास, विज्ञान, शिष्टाचार आदि गुणों का विकास कर सकें । इसी उद्देश्य से छात्राओं को प्रतिवर्ष शैक्षणिक भ्रमण की सुविधा दी जाती है इसके अन्तर्गत छात्राएँ, हरिद्वार, ऋषिकेश, मसूरी, गंगटोक, नाथुला, सिक्किम, अयोध्या, वाल्मीकि आश्रम, रामकोला आदि स्थलों का भ्रमण कर चुकी हैं।

स्मार्ट क्लास : महाविद्यालय में LCD प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर एवं अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त स्मार्ट क्लास की सुविधा है । महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा समय-समय पर स्मार्ट क्लास में शिक्षण की व्यवस्था दी जाती है ।

पुस्तकालय एवं वाचनालय : 'पुस्तकीय भवति पंडित', इस मान्यता के आधार पर ज्ञान प्राप्त करने में पुस्तकें सहायक होती हैं । पुस्तकालय में समस्त विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें, शोध पत्रिकाएं, संदर्भ ग्रन्थ के साथ ही समाचार पत्र एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध है ।

1. पुस्तकालय कार्ड की सुविधा प्राप्त करने के लिए प्रत्येक छात्र के पास पुस्तकालय-कार्ड होना अनिवार्य है ।
2. पुस्तक को किसी प्रकार की हानि होने पर या उस पर लिखने या पेज फाड़ने पर दण्डित किया जा सकता है ।
3. पत्र-पत्रिकाएं, सन्दर्भ ग्रन्थ आदि वाचनालय में ही पढ़े जा सकते हैं/उसे घर ले जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

इसके साथ ही कम्प्यूटर सुविधा युक्त वाचनालय भी उपलब्ध है ।

अनुशासन समिति द्वारा बनाए गए नियम एवं शर्तें-

महाविद्यालय में छात्राओं की समस्याओं के समाधान हेतु नियन्ता-मण्डल का गठन किया गया है, जो छात्राओं मे अनुशासन को बनाए रखने का यथा सम्भव निर्देश देते हैं ।

1. महाविद्यालय में छात्राओं को प्रवेश करने के लिए परिचय-पत्र का होना अनिवार्य है ।
2. छात्राएं साइकिल वाहन स्टैण्ड पर ही रखें । परिसर में किसी प्रकार के अन्य वाहन का प्रवेश वर्जित है ।
3. महाविद्यालय में किसी भी प्रकार की गन्दगी फैलाना दण्डनीय है । शिकायत मिलने पर आवश्यक कार्यवाही की जा सकती है ।
4. महाविद्यालय में **मोबाइल का अनावश्यक प्रयोग दण्डनीय है ।**
5. महाविद्यालय में शान्तिपूर्ण व्यवस्था एवं सुचारू पठन-पाठन का वातावरण बनाए रखना छात्राओं की जिम्मेदारी होगी ।
6. महाविद्यालय में अनुशासन एवं अनुकूल शैक्षणिक वातावरण बनाएं रखने के लिए **छात्रा-कार्य-परिषद निर्वाचन** प्रक्रिया के माध्यम से सम्पन्न होता है । छात्र-कार्य-परिषद की निर्वाचित छात्राएं पठन-पाठन एवं अनुशासन में नियन्ता-मण्डल का पूर्ण सहयोग करती है ।

Scanned with OKEN Scanner

प्रयोगशाला	:	बी0एस-सी0 गृहविज्ञान हेतु विज्ञान प्रयोगशाला की व्यवस्था है ।
सांस्कृतिक कार्यक्रम	:	वर्ष भर महापुरूषों की जयन्ती व राष्ट्रीय पर्व पर विशेष रूप से अतिथि भाषण व राष्ट्रीय मूल्य संवर्धित करने के कार्यक्रम आयोजित होते हैं । जिसका उद्देश्य छात्राओं के ज्ञान को बहुआयामी बनाना है ।
छात्रावास सुविधा	:	महाविद्यालय में छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है ।

नारा

जो भरा नहीं है भावों से, बहती उसमें रसधार नहीं । वह हृदय नहीं, वह पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नही । जिसको ना निज गौरव तथा निज देश पर अभिमान है । वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है । जन्म जहाँ पर हमने पाया, अन्न जहाँ का हमने खाया, वस्त्र जहाँ के हमने पहनें, वह है प्यारा देश हमारा । इसकी रक्षा कौन करेगा ? हम करेंगे, हम करेंगे कैसे करेगें ? तन से करेंगे, मन से करेंगे, धन से करेंगे ॥

प्रार्थना - 1

यज्ञ रूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए । छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए ॥
वेद की बोले ऋचाएँ सत्य को धारण करें । हर्ष में हो मग्न सारे, शोक-सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचाएं यज्ञ पर उपकार हो । धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें । रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाए मन से पाप-अत्याचार की । कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की ॥
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए । वायु जल सर्वत्र हों शुभ-गन्ध को धारण किये ॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो । इदंनमम् का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
हाथ जोड़, झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहें । 'नाथ' करूणारूप करूणा आपकी सब पर रहे ॥

प्रार्थना - 2

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी, क्षत्रिय महारथी हो, अरिदल विनाशकारी ।
होवें दुधारू गौवें, वृष अश्व आशुवाही, आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही ।
बलवान सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें, इच्छानुसार बरसें परजन्य ताप धोवें ।
फल फूल से लदी हो औषधि अमोघ सारी, हो योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी ।

Scanned with OKEN Scanner

कुलगीत

ज्ञान की पावन धरा यह वन्दना की भूमि
गुरू जी की साधना आराधना की भूमि ।

ज्ञान को करते नमन मेधावियों की अवलिया
त्याग और तपस्या ही है इस धरा की सिद्धियाँ ।
ज्ञान अर्जन की सृजन की रंजना की भूमि
कर्म निष्ठा में रमी यह वन्दना की भूमि ॥
ज्ञान की पावन..... (1)

वाग्देवी की धरा यह शान्ति का प्रतीक है
नित्य नूतन कर्म होते प्रखर और पुनीत है ।
चन्द्र की कान्ति सदृश्य यह वन्दना की भूमि
ज्ञान की पावन धरा यह साधना की भूमि ॥
ज्ञान की पावन..... (2)

कर्म का करते वरण सब भावना में लीन है
स्वप्न को मिलते यहाँ नित्य कर्म पंख नवीन है ।
गुरूजनों की ज्ञान वाणी से प्रकाशित यह धरा
कर्मवीरों की धरा यह ज्ञान वीरों की धरा ॥
रामरक्षा की धरा यह साधना की भूमि ॥
पुष्पदंत अध्यक्ष की आराधना की भूमि।
ज्ञान की पावन..... (3)

डॉ. सुमन सिंह
प्राचार्या
हिन्दी विभाग

Scanned with OKEN Scanner

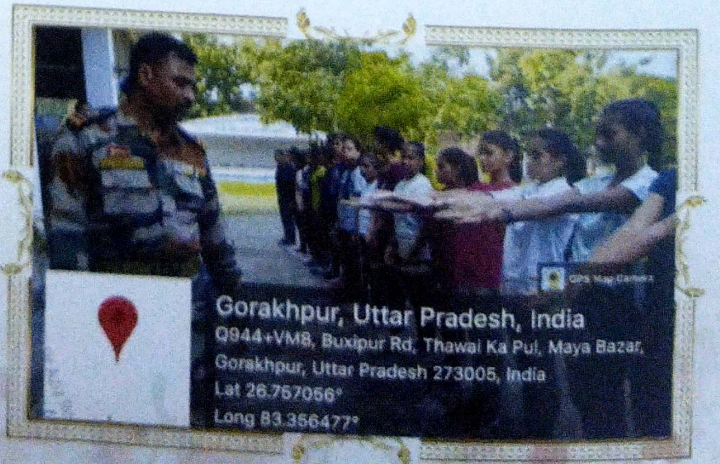

Scanned with OKEN Scanner

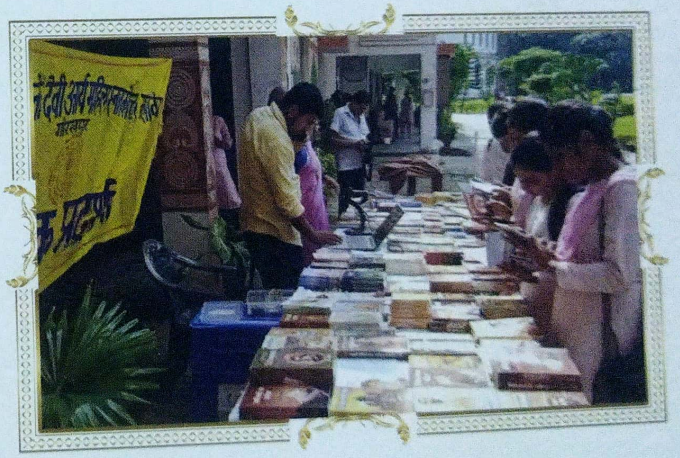

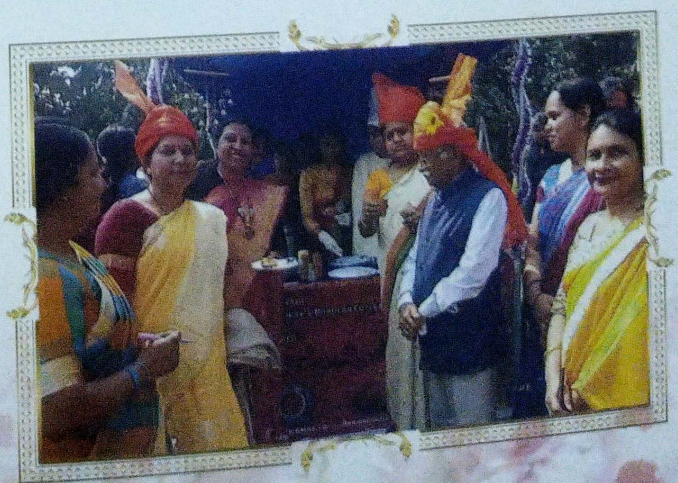

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner